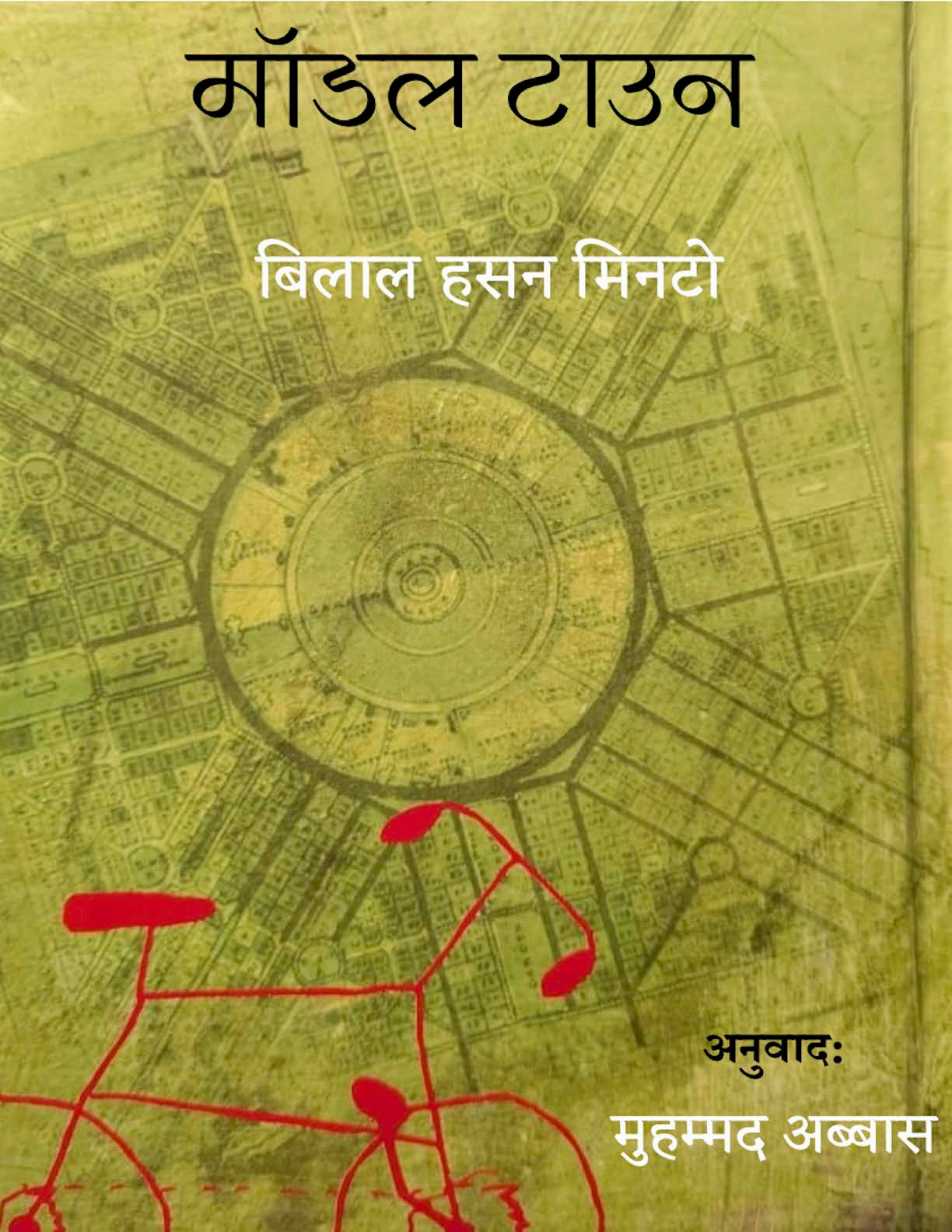

मॉडल टाउन

बिलाल हसन मिनटो

अनुवादः

मुहम्मद अब्बास

मॉडल टाउन

बिलाल हसन मिनटो

अनुवाद: मुहम्मद अब्बास

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जून, 2025

प्रस्तावना

“मॉडल टाउन” बेलाल हसन मिनटो की कहानियों का पहला संग्रह है। या शायद ये रेखाचित्र हैं! कभी - कभी तो ऐसा लगता है इस किताब पर आधुनिक उपन्यास का प्रभाव है। वर्तमान समय के अंतर्राष्ट्रीय साहित्य की पृष्ठभूमि में देखें तो संभवत: फ़र्क़ नहीं पड़ता कि हम इस किताब को किसी ख़ास विधा की लेबल लगी किसी पुरानी बोतल या मर्तबान में क़ैद करें। अंतर्राष्ट्रीय साहित्य में तो काफ़ी समय से जादुई यथार्थवाद की भी चर्चा है हालाँकि गद्य अगर वास्तविकता का चित्रण करता हो तो इसमें जादू-टोने का क्या काम? लेकिन इस तरह के साहित्य का जादू ही यह है कि वह यथार्थ और गल्प को महारत के साथ इकट्ठा करके बहुत ख़ूबी के साथ अपने तिलिस्म निर्मित करता है। तभी तो इसका जादू इतने समय से सर चढ़कर बोल रहा है और ऐसा कि हमारे मशहूर बंगाली बाबा का जादू भी इसके आगे फीका है। बहरहाल कहना यह है कि वर्तमान समय के अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त लेखक लम्बे समय से आलोचकों के बँधे बँधाए पुराने ढंग के आवरणों को तार-तार करके नित नये लिबास से ख़ुद को सजाने और नये-नये रूप धरने में कामयाब और माहिर हो चुके हैं। अब पाठक और आलोचक भी उनके काम को पुराने चश्मों से देखने और बेकार फ़ीतों और आलों से नापने के बजाये इसको नयेपन, हुनर, फ़नकारी और ज़िंदगी के पेचीदा और उलझे हुए

पहलुओं के सधे हुए चित्रण और विचारणीय व्याख्याओं की क्षमता वाले लेंस से जाँचते हैं। इससे ये न समझा जाए कि कहानी ख़त्म हो गई है या नज़्म की अब कोई परिभाषा मौजूद नहीं है बल्कि यह कि उपन्यास, कहानी और लम्बी नज़्म, और तेज़ी से परवान चढ़ रहे हैं और उनके मानी और पहलू भी ज़िंदगी की तरह तक़रीबन उसी रफ़्तार से गतिशील भी हैं और स्थायी भी।

ज़ाहिर है कि हर एक को मॉडल टाउन की इन कहानियों को अपने दृष्टिकोण से देखने का हक़ है मगर मेरे विचार में जवानी के अनुभवों पर आधारित या coming of age कहानियाँ हैं जिनमें सामाजिक जीवन और उसकी समस्याओं को संवेदनशील बच्चे की नज़र से देखा और दिखाया गया है। ऐसा बच्चा जो वह अनुभव और भावनाएँ अभिव्यक्त कर सकता है और ऐसे सवाल पूछ सकता है जो अक्सर वयस्क डर, नीति, झिझक या परंपरा के प्रभाव में आकर अपनी ज़बान पर नहीं लाते। इस बच्चे के लिए अभी सुबह सुनहरी है, हक़ीक़त सायों में छिपी हुई नहीं है और Social taboo कोई ख़ास मायने नहीं रखते। यह वो हक़ीक़त है जो वह बयान करता है, तोड़मड़ोड़, मिलावट, अतिशयोक्ति और झूठ के घालमेल के बग़ैर, शुद्ध, कड़वी और परेशान करने वाली सच्चाई। बच्चे की भाषा में प्रस्तुत अनुभव अक्सर वयस्कों से बहुत अधिक ठोस, बौद्धिक और तार्किक हैं। उसकी धारणा और अभिव्यक्ति में

भोलापन भी है और भेदभाव और पाखंड से मुक्त व्यंग्य के बाण भी। उसके अवलोकन से उभरने वाली दुनिया की शक्ल हास्यास्पद और घिनौनी भी है और दुख:द भी।

मॉडल टाउन लाहौर का एक ख़ूबसूरत, हरा भरा और धनी आवासीय क्षेत्र है। और शब्द "मॉडल" यानी "मिसाली" का यहाँ इस्तेमाल अर्थपूर्ण है क्योंकि यह शब्द और उस इलाक़े से संबंधित कहानियाँ समाज और संस्कृति दोनों को चित्रित करती हैं। धार्मिक भेदभाव, लांछन और शोषण पर आधारित व्यवहार, जो हमारे पूरे समाज की बीमारी की वजह है, इनके विषाणु इस कहानी के, मिसाली इलाक़े की फ़िज़ा में भी अपनी पैठ बना चुके हैं; चाहे ये धैर्य और सहिष्णुता की कमी हो या लोकतांत्रिक मूल्यों का ह्रास, यौन कुंठा से पैदा होने वाली समस्याएँ हों या शिक्षा व्यवस्था की बदहाली, वर्गीय दंभ हो या उच्छृंखल शक्तियों से नापाक इश्क़, या फिर चुगली, घृणा, धार्मिक उन्माद और ढोंग का वह जोशांदा जो हमारे गलों को और ज़्यादा नफ़रत को निगलने के लिए तर करता है। चूँकि यह मॉडल टाउन हमारे समाज का हिस्सा भी है, उसका प्रतिबिंब भी और उसका "microcosm" भी।

संग्रह की सातवीं कहानी बाक़ी कहानियों से अलग है। वैसे इस कहानी का प्लॉट मॉटल टाउन में ही स्थित है मगर इसके चरित्र बाक़ी छ: कहानियों से जुड़े हुए नहीं हैं। पहली छ: कहानियों के अक्सर चरित्र साझे हैं और यह कहानियाँ उन चरित्रों की ज़िंदगी के विभिन्न पहलुओं की वजह से आपस में जुड़ी हुई हैं। चरित्र भिन्न होने

के बावजूद आख़री कहानी पहली छ: कहानियों से बिलकुल ही कटी हुई नहीं है और कथन शैली, विषय और दृष्टि के कई पहलू इसे बाक़ी कहानियों से जोड़ते हैं।

मेरी नज़र में जो ख़ास बात इन कहानियों को विशिष्ट बनाती है, इनको पढ़ना आसान और बेहद मज़ेदार बनाती है, वह लेखक का हास्य और कथन शैली है। ज़ाहिर तौर पर बेतुकी, absurd और कहानी से असंबद्ध (irrelevant) चीज़ों का विवरण और दैनिक जीवन से लेकर ऐतिहासिक महत्व की घटनाओं का वर्णन बहुत तीखे और दिलचस्प अंदाज़ में किया गया है, जो मज़ेदार भी है और कहानियों के प्रवाह में रुकावट पैदा करने के बजाय सोच को उड़ान के नित नये अवसर प्रदान करता है। ऐसी बेजोड़ कथन शैली, पद्धति और भाषा की निर्मिति बहुत ही कठिन काम है। लेखक भाग्यशाली है कि उसकी भाषा और शैली बिलकुल उसकी अपनी है, किसी और की नहीं, और बहुत जानदार भी है। उसको बनाने सँवारने में उसकी मेहनत प्रशंसनीय है... या शायद वह हमेशा से यूँही बात करता आया है और हम अब पहली बार उसे "सुन" रहे हैं।

डॉक्टर ओसामा सिद्दीक़

लाहौर, नवंबर 2014

धन्यवाद ज्ञापन

मैं इन कहानियों के लिखे जाने और प्रकाशन के दौरान सलाह और मदद के लिए ओसामा सिद्दीक़, सुहैल रुस्तम ख़ान, मोहम्मद आमिर तौसीफ़, राजा फ़ारूक़ सुलतान, सुहैल रज़ा, आमना शरीफ़, सादिया शरीफ़, अली ज़ाहिद रहीम और राना मोहम्मद इरफ़ान का आभारी हूँ। अपनी माँ मोहतरमा तसनीम मंटो और अपनी बहन मोहतरमा साएरा मंटो का भी आभारी हूँ जिन्होंने कहानियाँ पढ़ीं और पसंद करके हैरत का इज़हार किया। कम वक़्त में किताब में शामिल स्केच तैयार करने के लिए लैला रहमान का बहुत शुक्रिया।

आमान शरीफ़ का बहुत शुक्रिया कि उन्होंने किताब का कवर तैयार किया।

लेखक का फ़ोटो: सुहैल रुस्तम ख़ान

बैक कवर

मॉडल टाउन की अधिकतर कहानियाँ 2004 में लिखी गई थीं। लेखक ने पच्चीस मिनट के अंतराल का एक अंग्रेज़ी स्टेज ड्रामा “Glad Tiding” लंदन की थियेटर कम्पनी Paines Plough के लिए 2007 में लिखा जो दूसरे पाकिस्तानी लेखकों के ड्रामों के साथ प्रस्तुत किया गया। लेखक लाहौर में वकालत करता है, LUMS में बतौर विज़िटिंग फ़ैकल्टी पढ़ाता रहा है और कभी-कभी कम लागत की उर्दू फ़िल्में बनाता है (वर्ल्ड का सेंटर 2002, जावेद शैम्पू 2005, काली शलवार 2007, सफ़र 2007)

अनुक्रम

फ़ेल्यर	9
पोस्टमॉर्टम	66
डॉक्टर वॉल्टर	109
स्फ़िग्मोमैनोमीटर	161
आसिया	227
आशंका	274
कीड़ा	306

फ़ेल्यर

एक रोज़, मार्च के महीने में, सोमवार की सुबह, मैं छठी जमात में गया। पाँचवीं जमात तक, जब हम जूनियर स्कूल में थे तो सीनियर स्कूल को बड़ी हसरत से देखा करते थे जहाँ लड़के निकरों की जगह पतलूनें पहनते थे। कभी-कभी ये सोचकर हमें कुछ-कुछ डर भी लगता था कि हम भी बहुत जल्द पाँचवीं जमात पास कर के वहाँ सीनियर स्कूल में जाकर पढ़ेंगे, क्योंकि सीनियर स्कूल में शिक्षकों को छात्रों को सोटियों और ब्लैक बोर्ड साफ़ करने वाले लकड़ी के डस्टरों से मारने की इजाज़त थी जबकि जूनियर स्कूल में उस्तानियाँ सिर्फ़ थप्पड़ और घूँसे मार सकती थीं और लड़कियों के सरों के बाल खींच सकती थीं क्योंकि यह एक आम रिवाज है कि लड़कियां लम्बे-लम्बे बाल रखती हैं जो आसानी से हाथ में आ जाते हैं और उनको ज़ोर-ज़ोर से खींचा जा सकता है। जैसा कि सय्यदा ज़ूबिया रज़ा के बालों को मिस राना क़रीब-क़रीब हर रोज़ खींचती थीं क्योंकि वो स्कूल से सिर्फ़ दस मिनट के पैदल फ़ासले पर रहती थी मगर हमेशा क्लास शुरू होने के दस पंद्रह मिनट बाद स्कूल पहुँचती थी। जूनियर स्कूल में मिस तुय्यबा और मिस राना जैसी दो एक उस्तानियाँ ही ज़्यादा ज़ालिम थीं वर्ना बाक़ी तो बेचारी कुछ ख़ास नुक़सान नहीं पहुँचाती थीं।